



ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(4): 456-460
www.allresearchjournal.com
Received: 15-02-2022
Accepted: 19-03-2022

शत्रुघ्न राऊत

शिक्षकेत्तर कर्मचारी, चतुर्थ
वर्गीयकर्मि, कुँवर सिंह
महाविद्यालय, लहेरियासराय,
दरभंगा, बिहार, भारत

वर्तमान काल में वरिष्ठ नागरिकों की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति एवं समस्याओं का एक अध्ययन

शत्रुघ्न राऊत

सारांश

मानव जन्म के बाद से अपनी अवस्था में परिवर्तन को देखता और उसमें जीता है। 21 वीं सदी में वृद्धों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होने की संभावना है। विकसित राष्ट्रों में स्वास्थ्य एवं समूचित चिकित्सीय सुविधा के चलते व्यक्ति अधिक वर्षों तक जीवित रहते हैं अतः वृद्धों की जनसंख्या विकासशील राष्ट्रों से ज्यादा विकसित राष्ट्रों में ज्यादा है। वृद्ध लोगों में अक्सर सीमित पुनर्योजी क्षमताएं होती हैं और वे युवा व्यक्तियों की तुलना में बीमारी सिंड्रोम चोट और बीमारी के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। उम्र बढ़ने की जैविक प्रक्रिया को बुढ़ापा कहा जाता है। उम्र बढ़ने की प्रक्रिया के चिकित्सा अध्ययन को जेरोन्टोलॉजी कहा जाता है और बुजुर्गों को पीड़ित करने वाले रोगों के अध्ययन को जराचिकित्सा कहा जाता है। बुजुर्गों को सेवानिवृत्ति अकेलापन और उम्रवाद के आसपास अन्य सामाजिक मुद्दों का भी सामना करना पड़ता है। बुढ़ापा एक निश्चित जैविक अवस्था नहीं है, क्योंकि वृद्धावस्था के रूप में निरूपित कालानुक्रमिक आयु सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से भिन्न होती है। 2011 में संयुक्तराष्ट्र ने मानवाधिकार सम्मेलन का प्रस्ताव रखा जो विशेष रूप से वृद्ध व्यक्तियों की रक्षा करेगा।

कूटशब्द : वृद्ध व्यक्तियों, बुजुर्गों को पीड़ित

प्रस्तावना

वृद्धावस्था में “जीवन के बाद का हिस्सा” युवावस्था और मध्यम आयु के बाद जीवन की अवधि में आमतौर पर गिरावट के संदर्भ में” शामिल है। बुढ़ापा किस उम्र में शुरू होता है, यह परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि यह संदर्भ के अनुसार भिन्न होता है। संयुक्त राष्ट्र इस बात पर सहमत हो गया है कि 65 प्लस वर्ष को आमतौर पर वृद्धावस्था के रूप में दर्शाया जा सकता है। और वृद्धावस्था की अंतरराष्ट्रीय परिभाषा पर यह पहला प्रयास है।

हालांकि अफ्रीका में वृद्धावस्था के अपने अध्ययन के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO ने 55 को वृद्धावस्था की शुरुआत के रूप में निर्धारित किया है। साथ ही WHO ने माना कि विकासशील दुनिया अक्सर वृद्धावस्था को वर्षों से नहीं, बल्कि नई भूमिकाओं, पिछली भूमिकाओं के नुकसान या समाज में सक्रिय योगदान देने में असमर्थता से परिभाषित करती है। अधिकांश विकसित पश्चिमी देशों ने सेवानिवृत्ति के लिए 60-65 वर्ष की आयु निर्धारित की है। वरिष्ठ सामाजिक कार्यक्रमों के लिए पात्र बनने के लिए आमतौर पर 60-65 वर्ष की आयु होना

Corresponding Author:

शत्रुघ्न राऊत

शिक्षकेत्तर कर्मचारी, चतुर्थ
वर्गीयकर्मि, कुँवर सिंह
महाविद्यालय, लहेरियासराय,
दरभंगा, बिहार, भारत

आवश्यकता है। अलग-अलग देशों के समाज बूढ़ों की शुरुआत को 40 के दशक के मध्य से लेकर 70 के दशक तक भी मानते हैं। यद्यपि कई देश 65 की आयु तक पहुँचने पर एक व्यक्ति को बुजुर्ग मानते हैं, यह दृष्टिकोण अक्सर एक वृद्ध आबादी (सैंडरसन और शेरबोव 2008) के भीतर जीवन प्रत्याशा, जीवन की गुणवत्ता और कार्य के स्तर में सुधार के कारण विवादित होता है। कुछ संगठन उस उम्र का उपयोग करने का सुझाव देते हैं जिस पर राज्य पेंशन का अधिकार शुरू होता है, हालाँकि बुजुर्ग आबादी की परिभाषा बहु आयामी होती है और क्षमताओं में परिवर्तन जैसे कारकों को समायोजित करती है। (संयुक्त राष्ट्र 2012) वृद्धावस्था को परिभाषित करने की जटिलता का अर्थ है कि वृद्ध आबादी में उपचारों के लाभों की जांच करना साक्ष्य आधारित चिकित्सा का अभ्यास करने वाले चिकित्सकों के लिए चुनौति पूर्ण होने की संभावना है। मुख्य मुद्दा यह है कि जांच करते समय एक बुजुर्ग व्यक्ति की परिभाषा एक समान है, या यह परिवर्तनशील है, और इसलिए साक्ष्य के उपलब्ध निकाय की व्याख्या करने में अनिश्चित पैदा करता है।

वरिष्ठ नागरिक अमेरिकी अंग्रेजी में और कभी-कभी ब्रिटिश अंग्रेजी में प्रयुक्त होने वाले बूढ़े व्यक्ति के लिए एक सामान्य व्यंजना है। इसका तात्पर्य है कि जिस व्यक्ति को संदर्भित किया जा रहा है। वह सेवानिवृत्त है। समानार्थी शब्द में ब्रिटिश अंग्रेजी में वृद्धावस्था पेंशनभोगी या पेंशनभोगी और अमेरिकी अंग्रेजी में सेवानिवृत्त और वरिष्ठ शामिल है। कुछ शब्दकोष 65 से अधिक आयु के लोगों के लिए “वरिष्ठ नागरिक” के व्यापक उपयोग का वर्णन करते हैं। जब एक आधिकारिक संदर्भ में परिभाषित किया जाता है, तो वरिष्ठ नागरिकों का उपयोग अक्सर कानूनी या नीति-संबंधों कारणों के लिए किया जाता है कि यह निर्धारित किया जा सके कि आयु वर्ग के लिए उपलब्ध कुछ लाभों के लिए कौन पात्र है।

इसका उपयोग पारंपरिक शब्दों जैसे कि वृद्ध व्यक्ति वृद्धावस्था पेंशन भोगी या बुजुर्गों के बजाय शिष्टाचार के रूप में किया जाता है।

वृद्धावस्था की विशिष्ट विशेषताएं शारीरिक और मानसिक दोनों हैं। वृद्धावस्था के चिन्ह मध्य आयु के चिन्हों से इतने भिन्न होते हैं कि कानूनी विद्वान रिचर्ड पॉस्टर का सुझाव है कि, वृद्धावस्था में एक व्यक्ति के संक्रमण के रूप में उन्हें अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में “समय साझाकरण” एक ही पहचान के रूप में माना जा सकता है। वृद्धावस्था का एक मूल चिन्ह जो शरीर और मन दोनों के प्रभावित करता है, वह है “व्यवहार की सुस्ती”। यह “धीमा करने का सिद्धान्त” बढ़ती उम्र और

प्रतिक्रिया की धीमी गति शारीरिक और मानसिक कार्य प्रदर्शन के बीच एक संबंध पाता है।

मनुष्य के जिज्ञासा का परिणाम ही हमारी वे सभी उपलब्धियाँ हैं, जिन्हें हम तीन कोटी में क्रमशः वैचारिक, क्रियात्मक एवं भौतिक उपलब्धियों के रूप में देखते हैं, अनुभव करते हैं और वे सभी हमारी सामाजिक विरासत के अंश होते हैं।

घर परिवार तथा समाज प्रत्येक स्थान पर बूढ़े लोग देखने को मिलते हैं, और साथ ही उनके साथ हो रहे अच्छे और बुरे व्यवहार को आसानी से समझा जा सकता है। अनेकों प्रश्न उत्पन्न होते हैं कुछ प्रश्न का हल हम अगर ढूँढ़ भी ले तो उसे लागू करने में सब की भागीदारी चाहिए। परंतु जीवन की गाड़ी किसी के लिए रुकती नहीं है वह तो हरहाल सतत चल रही है। वृद्धों की समस्याएँ हमारे समाज में पनपता हुआ एक भंयकर स्वरूप है, जिससे सम्पूर्ण देश की भविष्य को खतरा है। सरल शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आज के आधुनिकता के कारण हमारा भारतीय समाज और इसकी अपनी परम्परा अपने नैतिकता को खोती जा रही है। पहले भारत के वृद्ध नई पीढ़ी के समाजीकरण तथा उसमें सांस्कृतिक सामाजिक, नैतिक मूल्यों का ज्ञान एवं जीवन से हासिल अनुभवों को हस्तान्तरित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहे हैं। औद्योगिकरण एवं नगरीयकरण की प्रक्रियाओं ने आधुनिकता को बढ़ावा दिया है तथा इसके परिणाम स्वरूप संयुक्त परिवारों का खंडन होता जा रहा है और एकांकी परिवार का स्वरूप तेजी से पैर पसार रहा है। एकांकी परिवार में वृद्ध अर्थात् बुजुर्ग की कोई जगह नहीं होती क्योंकि इस परिवार में माँ-बाप और केवल उनके बच्चे होंगे।

भारत में वृद्धों की समस्याएँ— वृद्धावस्था या बुढ़ापा जीवन की उस अवस्था को कहते हैं जिसमें उम्र मानव जीवन की औसत काल के समीप या उससे अधिक हो जाती है। आमतौर पर वृद्ध उस व्यक्ति को कहा जाता है जिसने 60 वर्ष की आयु पूरी कर ली है। कुछ समाजशास्त्रीयों ने वृद्धों को दो श्रेणी में विभाजित किया है युवा वृद्ध 60 से 75 वर्ष के मध्य तथा वृद्ध 75 वर्ष से अधिक। इस समय वृद्ध लोगों की आबादी 7.6 करोड़ का अनुमान लगाया जा रहा है।

भारत जनसंख्याकीय परिवर्तन के चरण में है। 1991 के जनगणना के अनुसार, भारत में बुजुर्गों की जनसंख्या 1951 में 20 मिलियन की तुलना में 57 मिलियन थी। 1991 और 2001 के बीच में बुजुर्गों की संख्या में काफी वृद्धि हुई और यह अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2050 तक वृद्ध लोगों की संख्या बढ़कर लगभग 324 मिलियन हो जाएगी। वृद्धावस्था

की समस्याएं कई प्रकार की हो सकती हैं जैसे-शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, परिवारिक उपेक्षा परित्याग, संयुक्त परिवार के अभाव, उचित देखभाल, मनोरंजन की समस्या आदि।

शारीरिक समस्याएँ-

- हड्डी और जोड़- पुरानी हड्डियों को “पतला और सिकुड़न” द्वारा चिह्नित किया जाता है। इसके परिणाम स्वरूप 80 वर्ष की आयु तक उँचाई में कमी (लगभग 2 इंच 5 cm) कई लोगों में एक झुकी हुई मुद्रा और हड्डी और जोड़ों के रोगों जैसे कि ऑस्टियो आर्थराइटिस और ऑस्टियोपोरोसिस के लिए अधिक संवेदनशील हो सकती है।
- क्रोनिक म्यूकस हाइपरसेरेटिन (सी.एम.एच.) खांसी के रूप में परिभाषित और थूक को उपर लाना बुजुर्ग व्यक्तियों में एक सामान्य श्वसन लक्षण है।
- दांतों की समस्या- वृद्धावस्था में कम लार और मौखिक स्वच्छता की क्षमता कम हो सकती है जिससे दांतों की सड़न और संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।
- पाचन तंत्र- लगभग 40% समय, वृद्धावस्था में पाचन संबंधी विकार जैसे कि निगलन में कठिनाई पर्याप्त खाने में असमर्थता और पोषण, कब्ज और रक्तस्राव को अवशोषित करने में असमर्थता होती है।
- एंशंसियल कंपकंपी (ईटी) उपरी शरीर के हिस्से में एक बेकाबू कंपन है। यह बुजुर्गों में अधिक आम है और उम्र के साथ लक्षण बिगड़ते जाते हैं।
- दृष्टि- प्रेसबायोपिया 50 साल की उम्र तक हो सकता है और यह विशेष रूप से कम रोशनी में छोटे प्रिंट को पढ़ने में बाधा उत्पन्न करता है।
- जल प्रपात- वृद्धावस्था में गिरने से चोट लगने का जोखिम होता है जिससे किसी युवा व्यक्ति को चोट नहीं लग सकती।
- चाल परिवर्तन- चाल के कुछ पहलू सामान्य रूप से वृद्धावस्था के साथ बदलते हैं। 70 साल की उम्र के बाद चाल की गति धीमी हो जाती है।
- बाल आमतौर पर भूरे सफेद हो जाते हैं और पतले भी हो सकते हैं। कई पुरुष गंजेपन से प्रभावित होते हैं, और महिलाएँ रजोनिवृत्ति में प्रवेश करती हैं।
- प्रतिरक्षा कार्य- कम कुशल प्रतिरक्षा कार्य (इम्यूनोसेनेसेंस) वृद्धावस्था का प्रतीक है।

- फेफड़े कम अच्छी तरह से फैल सकते हैं, इस प्रकार वे कम ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।
- नींद की समस्या वृद्धावस्था में 50% से अधिक की पुरानी व्यापकता रखती है और इसके परिणाम स्वरूप दिन में नींद आती है। 65 वर्ष की आयु तक, गहरी नींद लगभग 5 प्रतिशत तक कम हो जाती है।
- स्वाद कलिकाएँ कम हो जाती हैं जिससे कि 80 वर्ष की आयु तक स्वाद कलिकाएँ सामान्य से 50% कम हो जाती हैं। भोजन कम आकर्षक हो जाता है और पोषण प्रभावित हो सकता है।
- 85 वर्ष की आयु में प्यास की धारणा कम हो जाती है जैसे कि 41% बुजुर्ग अपर्याप्त रूप से पीते हैं। आवाज़ वृद्धावस्था में वोकल कोर्ड कमजोर हो जाते हैं और अधिक धीरे-धीरे कंपन करते हैं। इसका परिणाम कमजोर सांस लेने वाली आवाज में होता है जिसे बूढ़े व्यक्ति की आवाज कहा जाता है।
- मूत्र असंयम अक्सर वृद्धावस्था में पाया जाता है।

मानसिक समस्याएं - वृद्धावस्था के मानसिक चिन्हों में निम्नलिखित शामिल हैं-

- अनुकूलनीय अधिकांश लोगों को उनके बूढ़ापे में वर्णित करता है। वृद्धावस्था को तनावपूर्णतः के बावजूद उन्हें “सहमत” और “स्वीकार करने” के रूप में वर्णित किया गया है। हालाँकि वृद्धावस्था निर्भरता अल्पमत में अक्षमता और बेकार की भावनाओं को प्रेरित करती है।
- उदास मन। कॉक्स, अब्रामसन, डिवाइन और होलोन के अनुसार, बूढ़ापा पूर्वाग्रह के कारण होने वाले अवसाद के लिए एक जोखिम कारक है। जब लोग बुजुर्गों के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित होते हैं और फिर खुद बूढ़े हो जाते हैं, तो उनका बुजुर्ग विरोधी पूर्वाग्रह अंदर की ओर मुड़ जाता है जिससे अवसाद होता है। “अधिक नकारात्मक उम्र के रुढ़िवादी वाल लोगों में उम्र बढ़ने के साथ अवसाद की उच्च दर होने की संभावना होगी। अवसाद के परिणाम स्वरूप 65 से अधिक आबादी में आत्महत्या की दर सबसे अधिक होती है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमानों के अनुसार 60+ आयु वर्ग के लगभग 15% लोगों में मानसिक विकार पीड़ित हैं। 15 देशों में किए गए अन्य सर्वेक्षण में बताया गया है कि व्यस्कों में मानसिक विकार शारीरिक समस्याओं से ज्यादा उनके दैनिक गतिविधियों में हस्तक्षेप करते हैं।

- कम मानसिक और संज्ञानात्मक क्षमता बूढ़ापे को प्रभावित करती है। वृद्धावस्था में स्मृति हानि एक आम बात है, क्योंकि सूचनाओं को एन्कोड, संग्रहीत और पुनर्प्राप्त करने की गति में कमी आती है। मनोभ्रंश स्मृति हानि और अन्य बौद्धिक क्षमताओं के लिए एक सामान्य शब्द है जो दैनिक जीवन में हस्तक्षेप करने के लिए पर्याप्त गंभीर है। वृद्धावस्था में इसका प्रसार 65 वर्ष की आयु में लगभग 10% से बढ़कर 85 वर्ष की आयु में लगभग 50% हो जाता है। डिमेंशिया के लगभग 50-80% मामलों में अल्जाइमर रोग होता है। मनोभ्रंश व्यवहार में भटकना, शारीरिक आक्रामकता, मौखिक विस्फोट, अवसाद और मनोविकृति शामिल हो सकते हैं।

आर्थिक समस्याएँ— वृद्धावस्था में व्यक्ति की शारीरिक क्षमताओं का हास के कारण वे स्वयं आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हो पाते हैं। ऐसे में उनके सामने तमाम प्रकार की आर्थिक समस्याएँ सर उठाने लगती हैं। वे पहले जैसे उत्पादक न होने के कारण अपना जीवन यापन स्वयं नहीं कर पाते और प्रौढ़ावस्था में प्राप्त होने वाले पूँजी का उपयोग बच्चों के पालन पोषण में खर्च कर चूके होते हैं। इसी समय में वे अपनी पूँजी में से कुछ अपनी वृद्धावस्था के लिए बचाए रखते हैं तो ऐसे वृद्धों के सामने आर्थिक समस्या कम ही आती है। ऐसे समय में जब वे अनुत्पादक हो चूके हैं उनके बच्चे एक स्पर्धा का हिस्सा है जिसमें आगे बढ़ने के लिए लगातार आर्थिक सुरक्षा की आवश्यकता होती है। तब वे अपने माता-पिता को बोझ समझने लगते हैं उनकी हर जरूरत बेकार के खर्च में जोड़ देते हैं। इस प्रकार वृद्धावस्था में बच्चों पर आश्रित होकर रह जाते हैं।

पारिवारिक उपेक्षा— वृद्धावस्था ऐसी अवस्था मानी जाती रही है कि जिसमें परिवार के सहारे की अपेक्षा बढ़ जाती है। ऐसे में उन्हें सहारा न मिलने के कारण या परिवार के सदस्यों के द्वारा उनकी उपेक्षा करने के कारण उनकी स्थितियाँ अत्यंत दयनीय हो जाती है। परिवार में अपमान प्रताड़ना और विभिन्न प्रकार का शोषण लगातार होने के कारण उनमें विभिन्न विकार उत्पन्न होने की संभावना होती है। 2011 के आँकड़ों से पता चलता है कि पिछले एक दशक में आवासों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। औद्योगिकरण और प्रवासन के कारण युवा वर्ग अपने माता-पिता को अकेले छोड़ने के लिए मजबूर हैं। शहरों के घरों से वृद्ध धीरे-धीरे गायब हो रहे हैं, क्योंकि उनकी जिम्मेदारी

लेनेवाला उनकी देखभाल करने वाला परिवार का सदस्य अब अपनी ही दुनिया को प्राथमिकता देता है। ऐसे कई कारणों से परिवार में वृद्धों की उपेक्षा लगातार हो रही है। आर्थिक स्वतंत्रता के समाप्त होने पर उन बुजुर्गों को अपने परिवार पर निर्भर होना पड़ता है। ऐसे स्थिति में बुजुर्ग के प्रति परिवार के सदस्यों को गैर जिम्मेदार होना वृद्धों के लिए किसी आपात से कम नहीं है। राम अहुजा 2016 अपनी पुस्तक सामाजिक समस्याएँ में वृद्धावस्था और वृद्धों से दुर्व्यवहार में वृद्धावस्था की समस्याओं को निम्नलिखित रूप से रेखांकित करते हैं:- 1. स्वास्थ्य में गिरावट, 2. आर्थिक सुरक्षा, 3. पृथकता/अलगाव, 4. उपेक्षा, 5. दुर्व्यवहार, 6. भय, 7. बोरियत, 8. आत्म सम्मान की कमी, 9. नियंत्रण की कमी, 10. वृद्धावस्था के लिए तैयारी की कमी इसके साथ होने वाले दुराचारों के प्रकारों को भी वे दर्शाते हैं।

परित्याग— देखभाल कर्ता या अन्य जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा वृद्धों का जान बूझकर परित्याग करना इसमें शामिल है।

संयुक्त परिवार के अभाव— भाग दौरे भरी जीवन में अब बच्चों को यह ध्यान नहीं रहता कि उनके माँ-बाप को उनकी आवश्यकता है, वे अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए अपने ही माँ-बाप से अलग होकर अपनी अलग दुनिया बसाते हैं जहाँ वह केवल खुद को और अपने बच्चों को महत्व देते हैं। इस प्रकार एक साथ रहने की व्यवस्था अब मान्य नहीं रह गयी।

उचित देखभाल— अब जहाँ बूढ़े लोगों को बोझ समझा जाने लगा है, वही उनके साथ रहना भी एक समस्या लगता है, आजकल के बच्चों को। इस प्रकार बूढ़े लोगों से लगाव कम होते-होते उनको अलग कमरे कोने वाला दे दिया जाता है जहाँ उनको कोई परेशान न कर सके या फिर उनसे कोई परेशानी युवा वर्ग को न हो। वह चुपचाप कोने में पड़े रहे उनकी तबियत भी पूछने वाला कोई नहीं होता।

मनोरंजन की समस्या— वृद्ध लोगों का बूढ़ापे में एकमात्र सहारा उसके बच्चे का बच्चा होता है और जब वही अपने माँ-बाप से पीछा छूड़ा लेते हैं तो अपने बच्चों को क्यों कर माता-पिता के पास रखेंगे। दूसरी मनोरंजन टी.वी. या अखबार होता है और जब आर्थिक समस्या होगी तो फिर यह मनोरंजन भी कहा से मिला जाएगा।

वृद्धों की समस्याओं का समाधान- पिछले कुछ दशकों में प्रत्येक देश की जनसंख्या में वृद्धों या बुजुर्गों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है और साथ ही उनके प्रति समाज का दायित्व भी बढ़ा है। अब वृद्धावस्था की समस्याओं को विश्वस्तर पर सुलझाने का प्रयास चल रहा है क्योंकि यह समस्या किसी एक घर परिवार या समाज का नहीं है वरण सम्पूर्ण विश्व में मानव जाति की समस्या है, वृद्धावस्था की समस्याएं।

वृद्धावस्था में होने वाली शारीरिक समस्याएं जैसे-मोटापा, ओसिओ, आर्थोराइटिस। मानसिक समस्याएं जैसे-चिंता, तनाव, अवसाद, मनोविकृति, डिमेंशिया आदि से वृद्ध प्रभावित होते हैं साथ ही परिवार के लोग भी परेशान रहते हैं। कई बिमारियों को इलाज से नियंत्रित किया जा सकता है परंतु कुछ रोगों का इलाज हर वर्ग के पहुँच में नहीं होता है। नगरों में इलाज संभव है परंतु ग्रामीण और छोटे कस्बों जैसे क्षेत्र से आने वालों की बहुत परेशानी होती है अतः बहुत कमलोग शहर का इलाज वृद्धों के लिए करवा पाते हैं। ऐसे क्षेत्रों में गैर सरकारी संगठन चल स्वास्थ्य इकाइयों के माध्यम से बुजुर्ग की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को हल करने में सहायता प्रदान करता है। कई इकाइयाँ अभाव ग्रस्त एवं उपेक्षित उन बुजुर्गों की सहायता करती है जो आर्थिक रूप से कमजोर है, विकलांग हैं इत्यादि।

निष्कर्ष :

वृद्धों की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन किसी भी प्रकार के अध्ययन एवं के अनुसंधान की सार्थकता और उसके महत्व के आधार पर ही उसका मूल्यांकन किया जाता है। वह चाहे भौतिक विज्ञानों से जुड़े कोई वस्तु हो या सामाजिक विज्ञानों की कोई विषय-वस्तु। यह वर्तमान अध्ययन का विषय वृद्धों की समस्याएं की साक्ष्य इसकी उपयोगिता एवं सामाजिक व्यवस्था में इसका महत्व मूल रूप से इसके सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व को बयान करती है। जैसा कि हम जानते हैं संस्कृति की अभिव्यक्ति तीन स्तरों से वैचारिक, क्रियात्मक एवं उपलब्धि पर होती है। वृद्धों की समस्याओं की अभिव्यक्ति भी इनही स्तरों पर उपलब्धि संसाधनों के आधार पर हुई हैं। वृद्ध की समस्याओं का मूल कारण समाज में आए औद्योगिक परिवर्तन, शहरीकरण, आधुनिकीकरण है, चूंकि अंतः पीढ़ी अंतराल तो हमेशा से रहा है, परन्तु अब वर्तमान युग में जो और पीढ़ी का अंतराल देखने को मिलता है उससे तो प्रचीन काल से आ रही सामाजिक व्यवस्था को ही बदल डाला है। परिवार का स्वरूप बदल कर रख दिया है, वृद्धों को जहां श्रेष्ठता

प्राप्त थी अब उस परिवार में उसी वृद्धों को बोझ समझा जाता है उसकी उपेक्षा होती है उन्हें इतना सताया जाता है कि वे परिवार से निकल जाए और यहाँ से वृद्धाश्रम नामी नए आवास की नींव अस्तित्व में आ गई। जहाँ परिवार में सताए हुए बुढ़े-पुराने लोग अपना आश्रय तलाश करते हुए, जा कर रहने लगते हैं।

संदर्भ :

1. वृद्धावस्था की कहानियाँ : गिरिराज शरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, (2004)
2. वृद्धावस्था : विनीता शिंधाल, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, (2014)
3. पुराने व्यस्कों में कमजोरी : एम. लिनम जेनेट, टॉपी, क्लास कैसियो, एम रिचर्ड (2006)
4. वृद्ध महिलाओं के प्रति उपेक्षा दुर्व्यवहार और हिंसा, आर्थिक विभाग और सामाजिक मामले, संयुक्त राष्ट्र (2013)
5. वृद्ध व्यक्तियों के मानवाधिकार, ओ० एच० सी० एच० आर० ओ० आर० जी०, मानवाधिकार के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त का कार्यालय।